विचार प्रवाह

राखी : बदलते समय में रिश्तों की अटूट डोर

आज का जीवन तेज़ रफ्तार और व्यस्तताओं से भरा है। परिवार छोटे हो रहे हैं और भाई-बहन अक्सर पढ़ाई, नौकरी या अन्य कारणों से अलग-अलग शहरों में रहने लगे हैं। ऐसे समय में रक्षाबंधन केवल एक पारंपरिक पर्व नहीं, बल्कि रिश्तों को फिर से महसूस करने और उन्हें सहेजने का अवसर बन गया है।

राखी का धागा भाई की कलाई पर बंधकर केवल रक्षा का वचन नहीं देता, बल्कि प्रेम, विश्वास और अपनत्व का प्रतीक बनता है। बदलते समाज में भाई-बहन का रिश्ता भी एक नए रूप में सामने आया है। अब भाई ही बहन की रक्षा करे, ऐसा नहीं; दोनों एक-दूसरे की खुशियों, सपनों और कठिनाइयों में साथ खड़े होते हैं।

आज बहनें आत्मनिर्भर होकर अपने सपनों को पूरा कर रही हैं और भाई उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने में सहयोगी बन रहे हैं। इसी तरह बहनें भी अपने भाइयों के जीवन में भावनात्मक सहारा और प्रेरणा बनती हैं। इसलिए रक्षाबंधन हमें समानता, सम्मान और पारस्परिक सहयोग का संदेश देता है।

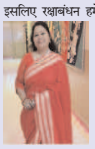

डिजिटल युग में दूर रहने वाले भाई-बहन वीडियो कॉल और संदेशों के माध्यम से एक-दूसरे से जुड़ जाते हैं, लेकिन राखी का वास्तविक महत्व उस भावना में है, जिसमें हम अपने व्यस्त जीवन से समय निकालकर अपने रिश्तों को महत्व देते हैं।

रक्षाबंधन हमें याद दिलाता है कि रिश्तों की मजबूती केवल साथ रहने से नहीं, बल्कि एक-दूसरे को समझने, सम्मान देने और हर परिस्थिति में साथ निभाने से होती है। यही इस पर्व की सबसे सुंदर और शाश्वत भूमिका है।

राखी की डोर
राखी केवल धागा नहीं,
यह रिश्तों का प्यार है,
दूर रहें फिर भी दिल में,
भाई-बहन का संसार है।
सुख-दुख में जो साथ निभाएँ,
वही सच्चा त्योहार है,
प्रेम, विश्वास और सम्मान से,
रिश्ता सदा गुलज़ार है।

डॉ. प्राची शुक्ला

ग्राम तिल्लोर में नशा मुक्ति के लिए शपथ

राऊ । 10 करोड़ नशा मुक्ति प्रतिज्ञा महा अभियान शिक्षण संस्थानों में नशा मुक्ति जागरूकता भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अधीन नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो एनसीजी एवं ब्रह्मा कुमारीज के बीच हुए एमआईयू के तहत मिशन स्पंदन नशा मुक्त भारत अभियान चलाया जा रहा है । इस अभियान में विद्यार्थियों ने ली नशे से दूर रहने की शपथ श्री उमिया पाटीदार तिल्लोर खुर्द स्कूल में शासकिय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जैसी अनेक स्कूलों में नशा मुक्ति कार्यक्रम आयोजित किया गया विद्यार्थियों के शारीरिक मानसिक सामाजिक आर्थिक दुष्परिणामों की जानकारी दी गई उन्हें नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित किया समाज में जागरूकता फैलाने के लिए भी प्रेरित किया समाज को नशा मुक्त बनाने का भी संकल्प लिया ।

आदर्श हनी पब्लिक स्कूल में देशभक्ति, समाजसेवा और हास्य योग का संगम

इंदौर। श्रमिक क्षेत्र, मार्तण्ड नगर स्थित आदर्श हनी पब्लिक स्कूल के प्रांगण में एक गरिमामय कार्यक्रम का आयोजन किया गया।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि *मिलिट्री से रिटायर्ड मेजर एवं समाजसेवी चंद्रा प्रकाश चंद रावत ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उन्होंने स्कूल के बच्चों के लिए फर्नीचर देने की घोषणा की।विशेष अतिथि *डॉ. पी.डी. गुप्ता ने ठंड के मौसम में बच्चों के लिए स्वेटर देने की घोषणा की।विशेष अतिथि समाजसेवी मदन परमालिया ने इंदौर की आन-बान-शान रहे कपड़ा मिलों की झांकियों के विषय में जानकारी दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए *लाफ्टर गुरु रमेश मौर्य एवं सुदिति राजपूत ने हास्य योग द्वारा बच्चों को आनंदित किया।अतिथियों का स्वागत प्राचार्य सरोज चंदेल, वाइस प्रिंसिपल अर्चना सोनी, काजल गुप्ता, सपना चौहान, शालू मैडम एवं स्कूल प्रबंधक राजेंद्र चंदेल जी ने पुष्पहार और तिरंगा पगड़ी पहनाकर सम्मानपूर्वक किया।

कभी धूप-कभी छांव का विमोचन कल

इन्दौर स्थानीय प्रीतमलाल दुआ सभागृह में कर 29 अगस्त को सुबह 10 बजे से आयोजित एक विमान समारोह में लेखिका नीरजा जैन के कहानी संग्रह कभी धूप-कभी छांव का विमोचन किया जाएगा। इस अवसर पर कहानी संग्रह पर चर्चा भी की जाएगी। चर्चा के दौरान वर्तमान परिदृश्य में कहानियों के महत्व पर प्रकाश भी डाला जाएगा। विमोचन राकेश दीवान, लेखिका व साहित्यकार ज्योति जैन और वरिष्ठ रंगकर्मी संजय पटेल की उपस्थिति में होगा।

कार्टून कोना

चमकता शहर, सुलगते सवाल

स्वच्छता के तमगों के बीच सफाईकर्मियों के हक का इंतजार कब खत्म होगा?

इंदौर (ई)। इंदौर की स्वच्छता देशभर में मिसाल है। पुरस्कार मिलते हैं, मॉडल की तारीफ होती है, लेकिन इस चमक के पीछे उन सफाईकर्मियों की मेहनत है, जो शहर के जागने से पहले सड़कों पर उतर जाते हैं। इसलिए सवाल सिर्फ शहर की सफाई का नहीं, उसे साफ रखने वाले हाथों के हक और सम्मान का भी है।

मंगलवार को नगर निगम मुख्यालय पर सफाई कर्मचारियों का प्रदर्शन इसी सवाल को सामने ले आया। वाल्मीकि समाज की चार पंचायतों के पदाधिकारियों और बड़ी संख्या में कर्मचारियों ने निगम आयुक्त को ज्ञापन सौंपकर तीन दिन में मांगों पर निर्णय की मांग की। ठेकेदारी प्रथा खत्म करने, वर्षों से कार्यरत कर्मचारियों के नियमितीकरण, दैनिक वेतनभोगियों को विनियमित करने और निलंबित-बर्खास्त कर्मचारियों की बहाली जैसे मुद्दे प्रमुख रहे।

सवाल उन कर्मचारियों का है, जिन्होंने 15, 20 और 30 साल निगम की स्वच्छता व्यवस्था को दिए। दशकों की सेवा के बाद भी यदि उन्हें नियमितीकरण और सेवा सुरक्षा के लिए प्रदर्शन करना पड़े, तो यह केवल कर्मचारियों का नहीं, व्यवस्था की संवेदनशीलता का सवाल है। ठेकेदारी प्रथा को लेकर भी कर्मचारियों में असंतोष है। लंबे समय से काम कर रहे कर्मचारियों को सेवा सुरक्षा मिले, यह उनकी प्रमुख मांग है। प्रशासन को ज्ञापन और परीक्षण की प्रक्रिया से आगे

बढ़कर पात्र मामलों में समयबद्ध फैसला करना होगा।

मामले का गंभीर पहलू यह भी है कि कुछ मस्टर कर्मचारी संगठन अपने अधिकारों के लिए सर्वोच्च न्यायालय तक लड़ाई लड़ चुके हैं। न्यायालयीन आदेश के बावजूद यदि पात्र कर्मचारियों को लाभ नहीं मिल रहा है, तो सवाल आदेश की अनुपालना पर उठता है। जहां न्यायालय का आदेश लागू है, वहां उसकी समयबद्ध अनुपालना जरूरी है। किसी तकनीकी या पात्रता संबंधी अड़चन की स्थिति में भी कर्मचारी को स्पष्ट जानकारी मिलनी चाहिए। वर्षों तक फाइलों में अटका अधिकार प्रशासनिक संवेदनशीलता पर सवाल खड़ा करता है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि कर्मचारियों को पात्र लाभ समय पर देना सरकार की जिम्मेदारी है और निर्णय में देरी अन्याय के समान है। इस संदेश की वास्तविक परीक्षा स्थानीय स्तर पर होगी। हर नियमितीकरण की मांग स्वीकार करना नियमों के तहत संभव नहीं हो सकता, लेकिन हर मामले की निष्पक्ष जांच और समयबद्ध निर्णय जरूर होना चाहिए। खासकर न्यायालयीन आदेश वाले मामलों में देरी से कर्मचारियों का असंतोष बढ़ना स्वाभाविक है।

इंदौर की स्वच्छता मशीनों और व्यवस्थाओं से नहीं, बल्कि उन सफाईकर्मियों की मेहनत से भी बनी है, जो हर मौसम में मैदान में डटे रहते हैं। इसलिए स्वच्छता के पुरस्कारों की चमक तभी पूरी होगी, जब उसे कायम रखने वाले श्रमिकों के अधिकार और भविष्य भी सुरक्षित हों।

तीन दिन का अल्टीमेटम निगम के लिए चेतावनी है। टकराव बढ़ने से पहले मांगों पर कर्मचारी संगठनों के साथ बैठकर मांगवार समीक्षा, पात्रता का निर्धारण और समय-सीमा तय की जानी चाहिए। साफ सड़कें स्वच्छता की तस्वीर हैं, लेकिन सफाईकर्मी के साथ न्याय उसकी असली पहचान। इंदौर की चमक तभी सार्थक होगी, जब शहर को चमकाने वाले हाथों को उनका हक भी समय पर मिले।

अंत में बस इतनी-सी बात है–

जिन हाथों ने शहर को संवारा,
उन्हें भी सम्मान चाहिए,
सिर्फ सफाई का तमगा नहीं,
हक का आसमान चाहिए।
शहर की चमक यूं ही कायम रहे, यही दुआ है मगर,
जो इसे चमकाते हैं, उनके जीवन में भी उजाला चाहिए।

चाचा नेहरू अस्पताल में बदहाली की इंतहा

मासूमों के इलाज के केंद्र में गंदे पानी की सप्लाई और RO पर रोक, वॉशरूम की गंदगी व पार्किंग की लूट से त्रस्त मरीज और परिजन

इंदौर। शहर के प्रमुख बाल चिकित्सालय चाचा नेहरू अस्पताल में स्वास्थ्य सेवाओं, स्वच्छता और प्रबंधन के दावों की पोल खुलती नजर आ रही है। गरीब परिवारों और उनके बीमार बच्चों के इलाज के लिए दूर-दराज से आने वाले तीमारदारों (अटेंडरों) को पीने के स्वच्छ पानी, साफ-सुथरे वॉशरूम और बुनियादी सुविधाओं के लिए भारी प्रताड़ना का सामना करना पड़ रहा है। अस्पताल में फैली इन लापरवाहियों के खिलाफ अब आम जनता और परिजनों में भारी आक्रोश है।

सीधे टंकी से सप्लाई हो रहा दूषित पानी, खराब पड़े हैं वाटर कूलर- अस्पताल में मरीजों और उनके परिजनों के लिए पीने के पानी की व्यवस्था अत्यंत दयनीय है। आरोप है कि अस्पताल में सीधे टंकी से गंदा पानी सप्लाई किया जा रहा है, जिससे बच्चों और मरीजों के स्वास्थ्य पर गंभीर खतरा मंडरा रहा है। यहां तक कि अस्पताल के वाटर कूलर भी लंबे समय से खराब पड़े हैं और उन पर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। इसके विपरीत, डॉक्टरों और स्टाफ के लिए बने विशेष किचन में व्यवस्थित ऋह लगा हुआ है और उनके लिए स्वच्छ पानी से भोजन तैयार किया जाता है, जबकि आम जनता और गरीब मरीजों को दूषित पानी पीने के लिए विवश होना पड़ रहा है।

RO का पानी भरने पर रोक, बाहर से पानी खरीदने की मजबूरी

अस्पताल में भर्ती बच्चों की देखभाल के लिए लंबे समय तक रुकने वाले अटेंडरों का कहना है कि उन्हें परिसर में लगे ऋह वाटर प्लांट से अपनी बोतलों में पानी भरने से रोका जा रहा है। पानी जैसी मूलभूत जरूरत के लिए भी रोक-टोक किए जाने के कारण उन्हें मजबूरन बाजार से महंगे दामों पर पानी खरीदना पड़ रहा है। परिजनों ने अस्पताल प्रबंधन से मांग की है कि परिसर में उपलब्ध RO का स्वच्छ पानी भरने की अनुमति तत्काल दी जाए।

वॉशरूम में फैली गंदगी और दुर्गंध, शिकायतों पर अनसुनी

अस्पताल के वॉशरूम की स्थिति बेहद बदतर हो चुकी है। नियमित सफाई न होने के कारण

वहां चारों तरफ गंदगी और भयंकर दुर्गंध फैली रहती है। मरीजों, बच्चों और उनके परिजनों द्वारा कई बार शिकायत किए जाने के बावजूद सफाई कर्मचारियों और प्रबंधन के कान पर जूं नहीं रेंग रही है। लंबे समय तक सफाई न होने से अस्पताल में संक्रमण फैलने का बड़ा खतरा बना हुआ है।

साइकिल स्टैंड पर ठेकेदार की मनमानी और खुली दादागिरी

अस्पताल आने वाले आम लोग वहां के साइकिल स्टैंड संचालक की मनमानी से भी त्रस्त हैं। तय रसीद राशि से अधिक पैसे वसूले जाने के साथ-साथ यदि कोई व्यक्ति मरीज के लिए दवा लेने बाहर जाता है और कुछ ही देर में वापस लौटता है, तो उससे हर बार आने-जाने पर दोबारा पैसे वसूले जाते हैं। जनता का सवाल है कि बार-बार पैसे वसूलने का यह कौन सा न्याय है? यह सीधे तौर पर आम जनता की लूट और स्टैंड संचालक की दादागिरी है।

स्टाफ का अभद्र और अपमानजनक रवैया

मरीजों और उनके साथ आए परिजनों का आरोप है कि जब वे पानी, सफाई या अन्य किसी व्यवस्था को लेकर अस्पताल के स्टाफ से बात करते हैं, तो उन्हें सहयोग करने के बजाय उल्टा अपमानित किया जाता है। अस्पताल का माहौल ऐसा बना दिया गया है कि यहां आने वाले गरीब और असहाय लोगों को यह महसूस होता है कि वे इलाज कराने नहीं बल्कि

अपमानित होने आए हैं।

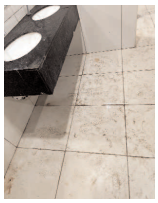

जिम्मेदार नागरिकों के खुलासे

अस्पताल की इन तमाम अव्यवस्थाओं और अंदरूनी लापरवाहियों का विस्तृत विवरण महेश चौहान सहित कई अन्य व्यक्तियों ने नाम न छापने की शर्त पर दिया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि अस्पताल प्रबंधन किस तरह

आम जनता की शिकायतों को नजरअंदाज कर रहा है।

जिला प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग से सख्त कार्रवाई की मांग

अटेंडरों, मरीजों के परिजनों और शहरवासियों ने जिला प्रशासन एवं स्वास्थ्य विभाग के उच्च अधिकारियों से तत्काल इस पूरे मामले का संज्ञान लेने की मांग की है। लोगों ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द ही पीने के पानी की उचित व्यवस्था, वॉशरूम की नियमित सफाई, साइकिल स्टैंड की मनमानी पर रोक और अस्पताल स्टाफ के रवैये में सुधार नहीं किया गया, तो कड़ा विरोध प्रदर्शन किया जाएगा।

राजेश निगम, इंदौर

(म. प्र. प्रदेश अध्यक्ष) भारतीय पत्रकार सुरक्षा परिषद एवं अखिल भारतीय कायस्थ महासभा

एचसीजी कैंसर हॉस्पिटल इंदौर जिप्सा में सूचीबद्ध

इंदौर, - एचसीजी कैंसर हॉस्पिटल, इंदौर को जनरल इंश्योरेंस पब्लिक सेक्टर एसोसिएशन ऑफ इंडिया के पैनल में शामिल किया गया है। जिप्सा देश की पब्लिक सेक्टर जनरल इंश्योरेंस कंपनियों का प्रतिनिधित्व करने वाली एसोसिएशन है।

इस पैनल में शामिल होने के बाद, द न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, द ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड और नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड जैसी भाग लेने वाली इंश्योरेंस कंपनियों के तहत कवर होने वाले पात्र लाभार्थी, लागू शर्तों, पैकेज और पॉलिसी गाइडलाइंस के अनुसार अब हॉस्पिटल की कैंसर केयर सेवाओं का लाभ ले सकते हैं। एचसीजी कैंसर हॉस्पिटल, इंदौर एक ही जगह पर व्यापक कैंसर केयर उपलब्ध कराता है। यहां मेडिकल, सर्जिकल और रेडिएशन ऑन्कोलॉजी सेवाओं के साथ एडवांस्ड डायग्नोस्टिक्स और मल्टीडिसिप्लिनरी टीम की सुविधा है, जो प्रत्येक मरीज के लिए उसके अनुसार उपचार की योजना तैयार करती है। हॉस्पिटल को हाल ही में ऑन्कोलॉजी केयर और ट्रीटमेंट में उत्कृष्टता के लिए मिर्ची बिजनेस क्लास अवॉर्ड से भी सम्मानित किया गया है। इस अवसर पर एचसीजी कैंसर हॉस्पिटल, इंदौर के चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर, श्री नितिन बामनिया, ने कहा, जिप्सा के पैनल में शामिल होने से क्षेत्र के पात्र लाभार्थियों को उनकी मौजूदा पॉलिसी के तहत मिलने वाले लाभों के अनुसार हमारी कैंसर केयर सेवाओं का लाभ लेने की सुविधा मिलेगी।

भारतीय मानवीय मूल्यों के कवि थे विश्वनाथ सत्यनारायण

इन्दौर। तमिल भाषा को नई दिशा देने वाले एवं समृद्ध करने वाले साहित्यकारों में विश्वनाथ सत्यनारायण जी का नाम सर्वोपरि है। मछली पट्टनम के 10 सितम्बर 1895 में जन्मे और 1976में इस संसार से विदा हुए।

विश्वनाथ जी को उनके महाकाव्य रामायण कल्पवृक्षमु पर ज्ञानपीठ पुरस्कार 1970 में मिला था। श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति ने कालजयी ज्ञानपीठ पुरस्कृत साहित्यकार श्रृंखला में उन्हें याद किया। वह भारतीय मूल्यों के कवि थे। संचालन कर रहे उमेश पारीख ने उनके जीवन पर प्रकाश डाला।

भरत उपाध्याय ने उनकी कहानियों पर चर्चा की। दूसरे सत्र में श्री नीलेश अवस्थी, रामआसरे पाण्डे, रामचन्द्र अवस्थी, दिनेश पाठक, मीना भण्डारी, दिलीप नेमा, कु. पूजा राज, नितेन्द्र मानव, श्यामसिंह, कमलकिशोर कासलीवाल एवं खण्डेलवाल ने भारतीय संस्कृति और रक्षाबन्धन विषय पर रचनाएं पढ़ी। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधानमंत्री अरविन्द जवलेकर ने आभार प्रचार मंत्री हरेराम वाजपेयी ने व्यक्त किया। इस अवसर पर घनश्याम यादव, नूपुर भण्डारी भी उपस्थित थे। कवि विश्वनाथ के चित्र का अनावरण किया गया।

'देहदान-जीवन के बाद भी जीवन'

इन्दौर। अपना विचार मंच, इंदौर के 69 वर्षीय वरिष्ठ सदस्य प्रवीणचंद जैन एवं 64 वर्षीय गौ भक्त विष्णुप्रसाद गुप्ता ने अपना देहदान संकल्प फॉर्म भरकर समाज को यह संदेश दिया है कि देहदान भी एक पुण्य का कार्य है। उन्हें यह प्रेरणा सामाजिक कार्यकर्ता श्री जीतू बगानी जी से मिली।

सरकारी स्कूल लसुड़िया मोरी में एड्स जागरूकता अभियान

इंदौर - गत दिवस आसरा सामाजिक लोक कल्याण समिति इंदौर की टीम द्वारा सघन जागरूकता अभियान के अंतर्गत शासकीय हाईस्कूल लसुड़िया मोरी में अलग अलग कक्षाओं में सेशन लिए गए,जिनकी विद्यार्थियों कुल संख्या 140 रही जिसके अंतर्गत एच आई वी /एड्स एवं हेपेटाइटिस क्ष्ष्ट एवं टी बी संक्रमण एवं उससे बचाव, सुरक्षित व्यवहार, नियमित एच आई वी जांच तथा समय पर स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़ने के संबंध में आवश्यक जानकारी साझा की गई।

आसरा की प्रोग्राम मैनेजर स्वाति शर्मा ने गतिविधि के दौरान समुदाय के सदस्यों को सेल्फ रिस्क असेसमेंट (एस आर ए) के बारे में भी समझाया ।

इस अवसर पर आसरा सामाजिक लोक कल्याण समिति की प्रोग्राम मैनेजर स्वाति शर्मा संस्था के प्राचार्य भूषण सराफ व शिक्षक संघ के प्रदेश मीडिया प्रभारी दिनेश परमार भी उपस्थित थे।